॥ श्री लक्ष्मी सहस्रनाम स्तोत्रम् ॥

हरिः ओम्च् नाम्नां साष्टसहस्रंच ब्रूहि गार्ग्य महामते
महालक्ष्मां महादेव्याः भुक्ति मुक्त्यर्थसिद्धये ॥१
श्रीगार्ग्य उवाच :
सनत्कुमार मासीनं द्वादशादित्य सन्निभं
अपृच्छन्योगिनो भक्त्या योगिनामर्थसिद्धये २
सर्वलौकिक कर्मभ्यो विमुक्तानां हिताय वै,
भुक्ति मुक्ति प्रदं जप्यमनुब्रूहि दयानिधे। ३
सनत्कुमार भगव न्सर्वज्ञोसि विशेषतः
आस्तिक्यसिद्धयोनृणां क्षिप्र धर्मार्ध साधनम्। ४
खिद्यंति मानवास्सर्वे धनाभावेन केवलं,
सिद्ध्यंति धनिनोन्यस्य नैव धर्मार्धकामनाः ५
दारिद्य्र ध्वंसिनी नाम केन विद्या प्रकीर्तिता,
केन वा ब्रह्म विद्यापि केन मृत्युविनाशिनी ६
सर्वासां सारभूतैका विद्यानां केनकीर्तिता,
प्रत्यक्षं सिद्धिदा ब्रह्मन्ता माचक्ष दयानिधे। ७
श्री सनत्कुमार उवाच :
साधु पृष्टं महाभागाः, सर्वलोक हितैषिणः
महतामेष धर्मश्च नान्येषा मिति मे मतिः ८
ब्रह्मविष्णु महादेव महेंद्रादि महात्मभिः
संप्रोक्तं कथयाम्यद्य लक्ष्मीनाम सहस्रकम्। ९
यस्योच्छारण मात्रेण दारिद्य्रान्मुच्यते नरः
किं पुन स्तज्जपाज्जापी सर्वेष्टार्धानवाप्नुयात्। १०
अस्य श्रीलक्ष्मी दिव्य सहस्र नामस्तोत्र महामंत्रस्य,
आनंद कर्दम चिक्लीं तेंदिरा सुतादयो महात्मानो महर्षयः
आनुष्टुप्छ्णअलिदः विष्णु मायाशक्तिः, महालक्ष्मीं परादेवता,
श्रीमहालक्ष्मी प्रसादद्वारा सर्वेष्टार्ध सिद्ध्यर्धे जपे विनियोगः,
श्रीमित्यादि षडंगन्यासः।
ध्यानं
पद्मनाभप्रियां देवीं पद्माक्षीं पद्मवासिनीं
पद्मवक्तां पद्महस्तां वंदे पद्मामहर्निशम्
पूर्णेलिदुबिंबवदनांरत्नाभरण भूषितां।
वरदाभय हस्ताढ्यां ध्यायेच्चंद्र सहोदरीम्

इच्छारूपां भगवतस्सच्चिदानंदरूपिणीं,
सर्वज्ञां सर्वजननी, विष्णुवक्षस्थलालयाम्
दयालुमनिशं ध्यायेत् सुखसिद्धि स्वरूपिणीम्
(यथोपदेशं मूलमंत्रं जपित्वा यधाक्रमं देव्यैसमर्प्य
ततश्शांभवी मुद्रया (भ्रूमध्ये) लक्ष्यमनु संधाय, नामसाहस्रं
जपेत्)
हरिः ओं :ऽ
नित्यागतानंतनित्या नंदिनी जनरंजनी,
नित्यप्रकाशिनी चैव स्वप्रकाश स्वरूपिणी। १
महालक्ष्मीर्महाकाली महाकन्या सरस्वती,
भोग वैभव संधात्री भक्तानुग्रहकारिणी, २
ईशावास्या महामाया महादेवी महेश्वरी
हृल्लेखा परमा शक्तिर्मातृका बीजरूपिणी। ३
नित्यानंदा नित्यबोधा, नादिनी जनमोदिनी,
सत्य प्रत्ययनी चैव, स्वप्रकाशात्मरूपिणी, ४
त्रिपुरा भैरवी विद्या, हंसा वागीश्वरी शिवा,
वाग्देवी च महारात्रिः, कालरात्रि स्त्रिलोचना, ५
भद्रकाली कराली च महाकाली तिलोत्तमा,
काली करालवक्तालिता कामाक्षी कामदा शुभा, ६
चंडिका चंडरूपेशा चामुंडा चक्रधारिणी
त्रैलोक्य जननी देवी, त्रैलोक्य विजयोत्तमा, ७
सिद्धलक्ष्मीं क्रियालक्ष्मी,र्मोक्षलक्ष्मीं प्रसादिनी,
उमा भगवती दुर्गा, चांद्री दाक्षायणी शिवा ८
प्रत्यंगिरा धरा वेला, लोकमाता हरिप्रिया,
पार्वती परमादेवी ब्रह्मविद्या प्रदायिनी ९
अरूपा बहुरूपा च, विरूपा विश्वरूपिणी,
पंचभूतात्मिका वाणी पंचभूतात्मिका परा १०
कालिका पंचिकावाग्मी हविं प्रत्यधिदेवता,
देवमाता सुरेशाना, वेदगर्भांबिका धृतिः ११
संख्या जातिः क्रियाशक्तिः, प्रकृतिर्मोहिनी मही।
यज्ञविद्या महाविद्या गुह्यविद्या विभावरी। १२
ज्योतीष्मती महामाता सर्वमंत्र फलप्रदा,
दारिद्य्र ध्वंसिनी देवी हृदयग्रंथि भेदिनी १३
सहस्रादित्य संकाशा चंद्रिका चंद्ररूपिणी,
गायत्री सोमसंभूतिस्सावित्री प्रणवात्मिका १४
शांकरी वैष्णवी ब्राह्मी सर्वदेवनमस्कृता, १५

सेव्यादुर्गा कुबेराक्षी करवीर निवासिनी।
जया च विजयाचैव जयंती चापराजिता। १६
कुब्जिका कालिका शास्त्री वीणापुस्तकधारिणी।
सर्वज्ञ शक्तिश्श्रीशक्ति,र्ब्रह्म विष्णु शिवात्मिका, १७
इडापिंगलिका मध्या मृणाली तंतुरूपिणी,
यज्ञेशानी प्रथा दीक्षा दक्षिणा सर्वमोहिनी। १८
अष्टांगयोगिनी देवी निर्बीजध्यानगोचरा,
सर्वतीर्थ स्थिता शुद्धा सर्व पर्वत वासिनी। १९
वेदशास्त्र प्रमादेवी षडंगादि पदक्रमा,
शिवा धात्री शुभानंदा, यज्ञकर्म स्वरूपिणी, २०
व्रतिनी मेनकादेवी ब्रह्माणी, ब्रह्मचारिणी,
एकाक्षरपरा तारा भवबंध विनाशिनी। २१
विश्वंभराधरा धारा, निराधाराधिकस्वरा,
राका कुहूरमावास्या पूर्णिमानुमतीद्युतिः २२
सिनीवाली शिवावश्या वैश्वदेवी पिशंगिला,
पिप्पला च विशालाक्षीरक्षोघ्नी वृष्टिकारिणी। २३
दुष्टविद्राविणी देवी सर्वोपद्रव नाशिनी,
शारदा शरसंधाना सर्वशस्त्र स्वरूपिणी। २४
युद्धमध्यस्थिता देवी सर्वभूत प्रभंजनी
अयुद्धा युद्धरूपा च शांता शांति स्वरूपिणी। २५
गंगा सरस्वती वेणी यमुना नर्मदापगा।
समुद्रवसना वासा, ब्रह्मांड श्रेणिमेखला, २६
पंचवक्ता दशभुजा शुद्धस्फटिकसन्निभा,
रक्ता कृष्णा सिता पीता सर्ववर्णा निरीश्वरी, २७
कालिका चक्रिका देवी सत्या तु वटुकास्थिता
तरुणी वारुणी नारी ज्येष्ठादेवी सुरेश्वरी, २८
विश्वंभर धरा कर्त्री गलार्गलविभंजनी
संध्या रात्रिर्दिवाज्योत्स्न कला काष्ठा निमेषिका। २९
उर्वी कात्यायनी शुभ्रा संसारार्णवतारिणी।
कपिला कीलिकाशोका मल्लिका नवमल्लिका। ३०
देविका नंदिका शांता भंजिका भयभंजिका।
कौशिकी वैदिकी देवी सौरीरूपाधिकातिभा ३१
दिग्वस्त्रा नववस्त्रा च, कन्यका कमलोद्भवा,
श्रीस्सौम्यलक्षणातीत, दुर्गा सूत्र प्रबोधिका ३२
श्रद्धा मेधा कृतिः प्रज्ञा धारणा कांतिरेवच।
श्रुतिः स्मृतिर्धृतिर्धन्या भूतिरिष्टिर्मनीषिणी ३३

विरक्तिर्व्यापिनी माया, सर्वमाया प्रभंजनी
माहेंद्री मंत्रिणी सिंही चेंद्रजाल स्वरूपिणी। ३४
अवस्थत्रय निर्मक्ता गुणत्रय विवर्जिता।
ईषणत्रय निर्मक्ता सर्वरोग विवर्जिता। ३५
योगि ध्यानांतगम्या च योगध्यान परायणा,
त्रयीशिखा विशेषज्ञा वेदांत ज्ञानरूपिणी। ३६
भारती कमला भाषा पद्मा पद्मावती कृतिः
गौतमी गोमती गौरी ईशानी हंसवाहिनी॥ ३७
नारायणी प्रभाधारा शांकरी शंकरात्मजा
चित्रघंटा सुनंदा श्रीर्मानवी मनुसंभवा, ३८
स्तंभिनी क्षोभिणी मारीभ्रामिणी शत्रुमारिणी,
मोहिनी द्वेषिणी वीरा अघोरा रुद्ररूपिणी। ३९
रुदैकादशिनी पुण्या कल्याणी लाभकारिणी
देवदुर्गा महादुर्गा स्वप्न दुर्गाष्टभैरवी, ४०
सूर्यचंद्राग्निरूपा च ग्रह नक्षत्ररूपिणी,
बिंदुनादकलातीता बिंदुनाद कलात्मिका, ४१
दश वायु जयाकारा कलाषोडश संयुता,
काश्यपी कमलादेवी नादचक्र निवासिनी। ४२
मृजाधारा स्थिरा गुह्या देविका चक्ररूपिणी,
अविद्या शार्वरी भुंजा, जंभासुरनिबlright जिणी, ४३
श्रीकाया श्रीकला शुभ्रा कर्म निर्मूल कारिणी।
आदिलक्ष्मीर्गुणाधारा, पंच ब्रह्मात्मिका परा। ४४
श्रुतिर्ब्रह्म मुखावासा, सर्वसंपत्तिरूपिणी।
मृतसंजीविनी मैत्री, कामिनी कामवर्जिता। ४५
निर्वाणमार्गदा देवी हंसिनी कालिका क्षमा,
सपर्या गुणिनी भिन्ना निर्गुणाखंडिता शुभा। ४६
स्वामिनी वेदिनी शक्या शांबरी चक्रधारिणी।
दंडिनी मुंडिनी व्याघ्री शिखिनी सोमसंहतिः ४७
चिंतामणिश्चिदानंदा पंचबाण प्रबोधिनी।
बाणश्रेणिस्सहस्राक्षी सहस्र भुजपादुका, ४८
संध्या बलि स्त्रिसंध्याख्या ब्रह्मांडमणि भूषणा
वासवी वारुणी सेव्या कुलिका मंत्ररंजनी। ४९
जितप्राणस्वरूपा च, कांता काम्यवरप्रदा
मंत्रब्राह्मणविद्यार्था नादरूपा हविष्मती, ५०
अधर्वणश्रुतिश्शून्या कल्पना वर्जिता सती,
सत्ताजातिः प्रमामेया, प्रमितिः प्राणदा गतिः ५१

अपर्णा पंचवर्णाच सर्वदा भुवनेश्वरी,
त्रैलोक्यमोहिनी विद्या सर्वभर्ती क्षराक्षरा। ५२
हिरण्यवर्णा हरिणी, सर्वोपद्रवनाशिनी
कैवल्यपदवीरेखा सूर्यमंडल संस्थिता। ५३
सोममंडलमध्यस्था मह्निमंडल संस्थिता।
वायुमंडल मध्यस्था व्योममंडल संस्थिता, ५४
चक्रिका चक्र मध्यस्था चक्रमार्ग प्रवर्तिनी,
कोकि लाकुल चक्रेशा पक्षतिः पंङ्किओपावनी, ५५
सर्वसिद्धांत मार्गस्था षड्वर्णा वरवर्जिता
शतरुद्रहरा हंत्री सर्वसंहार कारिणी। ५६
पुरुषा पौरुषी तुष्टिस्सर्वतंत्र प्रसूतिका,
अर्धनारीश्वरी देवी सर्वविद्या प्रदायिनी। ५७
भार्गवी याजुषी विद्या सर्वोपनिषदास्थिता।
व्योम केशाखिल प्राणा पंचकोश विलक्षणा ५८
पंचकोशात्मिका प्रत्य क्पंच ब्रह्मात्मिका शिवा
जगज्जराजनित्री च पंचकर्म प्रसुतिका। ५९
वाग्देव्याभरणाकारा सर्वकाम्यस्थिता स्थितिः
अष्टादश चतुष्पष्टिपीठिका विद्यया युता। ६०
कालिकाकर्षणश्यामा यक्षिणी किन्नरेश्वरी।
केतकी मल्लिकाशोका, वाराही धरणीध्रुवा, ६१
नारसिंही महोग्रास्या भक्तानामार्तिनाशिनी।
अंतर्बला स्थिरा लक्ष्मी,र्जरामरणनाशिनी, ६२
श्रीरंजिता महाकाया, सोमसूर्याग्नि लोचना,
अदितिर्देव माता च अष्टपुत्राष्टयोगिनी ६३
अष्टप्रकृतिरष्टाष्ट, विभ्राज द्विकृताकृतिः
दुर्बिक्ष ध्वंसिनी देवी, सीतासत्याचरुक्मिणी, ६४
ख्यातिजा भार्गवी देवी, देवयोनि स्तपस्विनी।
शाकंभरीमहाशोणा, गरुडोपरि संस्थिता। ६५
सिंहगा व्यघ्रगा देवी, वायुगा च महाद्रिगा,
आकारादि क्षकारांत सर्वविद्याधि देवता। ६६
मंत्र व्याख्यान निपुणा, ज्योतिश्शास्त्रैकलोचना।
इडापिंगलिका मध्य सुषुम्ना ग्रंथिभेदिनी, ६७
कालचक्राश्रयोपेता कालचक्र स्वरूपिणी,
वैशारदी मतिश्रेष्ठा वरिष्ठा सर्वदीपिका, ६८
वैनायकी वरारोहा श्रोणीवेलाबहिर्वलिः
जंभिनी जृंभिणी जृंभकारिणी गणकारिका, ६९

शरणी चक्रिकानंता, सर्वव्याधि चिकित्सकी,
देवकी देवसंकाशा, वारिधिः करुणाकरा, ७०
शर्वरी सर्वसंपन्ना, सर्वपाप प्रभंजनी,
एकमात्रा द्विमात्रा च त्रिमात्रा च तथापरा ७१
अर्धमात्रापरासूक्ष्मा, सूक्ष्मार्थार्थपरापरा,
एकवीरा विशेषाख्या षष्ठी देवी मनस्विनी, ७२
नैष्कर्म्या निष्कलालोका, ज्ञानकर्माधिका गुणा,
सबंध्वानंद संदोह्रा व्योमाकारा निरूपिता, ७३
गद्य पद्यात्मिका वाणी सर्वालंकार संयुता।
साधुबंधपदन्यासा सर्वौका घटिकावलिः, ७४
षट्कर्मी कर्कशाकारा, सर्वकर्म विवर्जिता।
आदित्यवर्णा चापर्णा, कामिनि वररूपिणी, ७५
ब्रह्माणी ब्रह्मसंताना वेदवागीश्वरी शिवा।
पुराण न्याय मीमांसा धर्मशास्त्रागम श्रुता, ७६
सद्योवेदवती सर्वा हंसी विद्याधिदेवता,
विश्वेश्वरी जगद्धात्री विश्वनिर्माणकारिणी, ७७
वैदिकी वेदरूपा च कालिका कालरूपिणी,
नारायणी महादेवी सर्वतत्त्व प्रवर्तिनी, ७८
हिरण्य वर्णरूपा च हिरण्यपद संभवा,
कैवल्यपदवी पुण्या कैवल्य ज्ञान लक्षिता, ७९
ब्रह्मसंपत्तिरूपा च ब्रह्म संपत्तिकारिणी,
वारुणी वारुणाराध्या सर्वकर्म प्रवर्तिनी, ८०
एकाक्षरपरा युक्ता सर्वदारिद्य्र भंजिनी,
पाशांकुशान्विता दिव्या वीणाव्याख्याक्ष सूत्रभृत्, ८१
एकमूर्तिस्त्रयीमूर्तिर्मधुकैटभ भंजिनी।
सांख्यासांख्यवती ज्वाला ज्वलंती कामरूपिणी, ८२
जाग्रती सर्वसंपत्तिस्सुषुप्ता स्वेष्टदायिनी।
कपालिनी महादंष्ट्रा भुकुटी कुटिलानना, ८३
सर्वावासासुवासा च बृहत्सृष्टिश्च शक्वरी।
छंदोगण प्रतिष्ठा च कल्माषी करुणात्मिका, ८४
चक्षुष्मती महाघोषा, खड्ग चर्म धराशनिः
शिल्पवैचित्य्र विद्योता सर्वतो भद्रवासिनी, ८५
अचिंत्य लक्षणाकारा सूत्र भाष्य निबंधना।
सर्ववेदार्थ संपत्ति सर्वशास्त्रार्थ मातृका, ८६
आकारादि क्षकारांत,स्सर्ववर्ण कृतस्थला,
सर्वलक्ष्मीस्सदानंदा सारविद्या सदाशिना, ८७

सर्वज्ञा सर्वशक्तिश्च खेचरीरूप गोच्छिता।
अणिमादि गुणोपेता पराकाष्ठा परागतिः, ८८
हंसयुक्त विमानस्था हंसारूढा शशिप्रभा।
भवानी वासनाशक्तिराकृतिखिलाखिला, ८९
तंत्र हेतुर्विचित्रांगी व्योमगंगा विनोदिनी।
वर्षा च वार्षिका चैव, ऋग्यजुस्सामरूपिणी, ९०
महानदी नदीपुण्यागण्य पुण्य गुणक्रिया,
समाधिगत लभ्यार्था, श्रोतव्या स्वप्रिया घृणा, ९१
नामाक्षरपरा(दा) देवी ह्युपसर्ग नखांचिता,
निपातोरुद्वयी जंघामातृका मंत्ररूपिणी, ९२
आसीना च शयाना च तिष्ठंती धावनाधिका।
लक्ष्यलक्षण योगाढ्या ताद्रूप्य गणनाकृतिः, ९३
एकरूपानेकरूपा सेंदुरूपा सदाकृतिः।
समास तद्धिताकारा विभक्ति वचनात्मिका, ९४
स्वाहाकारा स्वधाकारा श्री पत्यर्धांग नंदिनी।
गंभीरा गहना गुह्या योनि लिंगार्थ धारिणी, ९५
शोष वासुकि संसेव्या चपला वरवर्णिणी।
कारुण्याकार संपत्तिः कीलकृन्मंत्र कीलका, ९६
शक्तिबीजात्मिका सर्वमंत्रेष्टाक्षय कामना।
आग्नेयी पार्थिवा आप्या वायव्या व्योमकेतना, ९७
सत्यज्ञानात्मिकानंदा ब्राह्मी ब्रह्मसनातनी।
अविद्या वासना माया, प्रकृतिस्सर्व मोहिनी, ९८
शक्तिर्धारण शक्तिश्च चिद चिच्छक्तियोगिनी
वक्तारुणा महामाया मरीचिर्मदमर्धिनी, ९९
विराट्साहा स्वधा शुद्धा, निरूपाप्तिस्सुभक्तिगा।
निरूपिताद्वयी विद्या, नित्यानित्यस्वरूपिणी, १००
वैराजमार्ग संचारा सर्व सत्पथ दर्शिनी,
जालंधरी मृडानी च भवानी भव भंजनी, १०१
त्रैकालिक ज्ञान तंतु स्त्रिकाल ज्ञानदायिनी।
नादातीता स्मृतिः प्रज्ञा धात्रीरूपा त्रिपुष्करा, १०२
पराजिता विधानज्ञा विशेषितगुणात्मिका।
हिरण्यकेशिनी हेमा ब्रह्मसूत्र विचक्षणा, १०३
असंख्येय पदार्थांत,स्स्वरव्यंजन वैखरी,
मधुजिह्वा मधुमती मधुमासोदया मधुः, १०४
माधवी च महाभागा मेघगंभीर निस्स्वना,
ब्रह्मविष्णुमहेशादि ज्ञातव्यर्धविशेषगा, १०५

नाभौ वह्निशिखाकारा, ललाटे चंद्र सन्निभा,
भ्रूमध्ये भास्कराकारासर्व ताराकृति lright रिडदि, १०६
कृत्तिकादि भरण्यंत नक्षत्रेष्ट्यर्चितोदया।
ग्रहविद्यात्मिका ज्योतिर्ज्योतिर्विस्मृति जीविका, १०७
ब्रह्मांडगर्भिणी बाला, सप्तावरण देवता,
वैराजोत्तम साम्राज्या कुमार कुशलोदया, १०८
बगला भ्रमरांबा च शिवदूती शिवात्मिका।
मेरु विंध्याधि संस्थाना, काश्मीरपुर वासिनी, १०९
योगनिद्रा महानिद्रा, विनिद्रा राक्षसाश्रिता,
सुवर्णदा महागंगा पंचाख्या पंच संहतिः, ११०
सुप्रजाता सुवीर्या च, सुपोषा सुपतिश्शिवा,
सुगृहा रक्तबीजांता, हतकंदर्प जीविका, १११
समुद्र व्योम मध्यस्था समबिंदु समाश्रया।
सौभाग्यरस जीवातुस्सारासार विवेकदृक्, ११२
त्रिवल्यादिसुपुष्टांगा, भारती भरताश्रिता,
नादब्रह्ममयी विद्या, ज्ञानब्रह्ममयी परा, ११३
ब्रह्मनाडी निरुक्तिश्च, ब्रह्मकैवल्य साधना,
कालकेय महोदार वीर्य विक्रमरूपिणी, ११४
बडबाग्नि शिखावक्ता, महाकबल तर्पणा।
महाभूता महादर्पा महासारा महाक्रतुः, ११५
पंचभूता महाग्रासा पंचभूताधि देवता॥
सर्वप्रमाणा संपत्तिस्सर्वरोग प्रतिक्रिया, ११६
ब्रह्मांडांतर्बहिर्व्याप्ता विष्णु वक्षो विभूषिणी।
शांकरी विधिवक्त्रस्था, प्रवरा वरहेतुकी, ११७
हेममाला शिखामाला त्रिशिखा पंचलोचना।
सर्वागम सदाचार मर्यादा यातुभंजनी, ११८
पुण्यश्लोक प्रबंधाढ्या सर्वांतर्यामिरूपिणी।
सामगान समाराध्या श्रोतृकर्णरसायना, ११९
जीवलोकैक जीवातुर्भद्रोदार विलोकना,
तटित्कोटिलसत्कांति स्तरुणी हरिसुंदरी,१२०
मीननेत्रा च सेंद्राक्षी विशालाक्षी सुमंगला।
सर्वमंगल संपन्ना साक्षान्मंगलदेवता, १२१
देहहृद्दीपिका दीप्तिर्जिह्वा पापप्रणाशिनी।
अर्धचंद्रोल्लसद्दंष्ट्रा यज्ञवाटि विलासिनी, १२२
महादुर्गा महोत्साहा महादेव बलोदया,
डाकिनीढ्या शाकिनीढ्या हाकिनीड्या समस्तजुट्, १२३

निरंकुशा नाकिवंद्या षडाधाराधि देवता,
भुवन ज्ञान निश्श्रेणिर्भुवनाकार वल्लरी, १२४
शाश्वती शाश्वताकारा लोकानुग्रहकारिणी।
सारसी मानसी हंसी हंसलोक प्रदायिनी, १२५
चिन्मुद्रालंकृतकरा कोटिसूर्य समप्रभा।
सुखप्राणि शिरोरेखा सदसद्दृष्ट प्रदायिनी, १२६
सर्वसांकर्य दोषघ्नी ग्रहोपद्रवनाशिनी।
क्षुद्रजंतु भयघ्नी च विषरोगादि भंजनी, १२७
सदाशांता सदाशुद्धा गृहच्छिद्र निवारिणी।
कलिदोष प्रशमनी कोलाहल पुरस्थिसता, १२८
गौरी लाक्षणिकी मुख्या, जघन्याकृति वर्जिता,
मायाविद्या मूलभूता वासवी विष्णुचेतना, १२९
वादिनी वसुरूपा च, वसुरत्न परिच्छदा,
छांदसी चंद्र हृदया, मंत्र स्वच्छंदभैरवी, १३०
वनमाला वैजयंती, पंच दिव्यायुधात्मिका।
पीतांबरमयी चंच तौओस्कुभा हरिकामिनी, १३१
नित्या तथ्या रमा रामा,रमणी मृत्यु भंजनी।
ज्येष्ठा काष्ठा धनिष्ठांता, शरांगी निर्गुणप्रिया, १३२
मैत्रेया मित्रविंदा च, शेष्य शेष कलाशया,
वाराण सी वासलभ्या, चार्यावर्त जनस्तुता, १३३
जगदुत्पत्ति संस्थान संहारत्रय कारणा।
त्वमंब विष्णुसर्वस्वं नमस्तेस्तु महेश्वरि १३४
नमस्ते सर्वलोकानां जनन्यै पुण्यमूर्तये।
सिद्‍थ लक्ष्मीर्महाकाली महालक्ष्मीर्नमोस्तुते, १३५
सद्योजातादि पंचाग्निरूपा पंचक पंचिका
यंत्रलक्ष्मीर्भवत्यादिराद्याद्ये ते नमोनमः, १३६
सृष्ट्यादि कारणाकार वितते दोषवर्जिते।
जगल्लक्ष्मीर्जगन्मातर्विष्णुपत्नी नमोस्तुते, १३७
नवकोटिमहाशक्ति समुपास्य पदांबुजे,
कनत्सौवर्णरत्नाढ्य, सर्वाभरणभूषिते, १३८
अनंतनित्य महिषी प्रपंचेश्वरनायकी।
अत्युच्छ्रित पदांतस्थे, परम व्योमनायकी, १३९
नाकपृष्ठगताराध्ये विष्णुलोक विलासिनी।
वैकुंठराजमहिषी, श्रीरंग नगराश्रिते, १४०
रंगनायकि भूपुत्री कृष्णेवरद वल्लभे।
कोटिब्रह्मांजादि संसेव्ये कोटिरुद्रादिकीर्तिते, १४१

मातुलुंग मयं खेटं, सौवर्ण चषकं तथा,
पद्मद्वयं पूर्णकुंभं, कीरं च वरदाभये, १४२
पाशमंकुशं शंखं च, चक्रं शूलं कृपाणिकां,
धनुर्भाणौ चाक्षमालां चिन्मुद्रा मपि बिभ्रती, १४३
अष्टादशभुजे लक्ष्मीर्महाष्टादश पीठगे।
भू नीलादि संसेव्ये च स्वामि चित्तानु वर्तिनी, १४४
पदे पद्मालये पदी, पूर्णकुंभाभिषेचिते।
इंदिरेंदिंदिराभाक्षी, क्षीरसागर कन्यके, १४५
भार्गवी त्वं स्वतंत्रेच्छा, वशाकृत जगत्वतिः
मंगला मंगलानां त्वं देवतानां च देवता, १४६
त्व मुत्तमोत्तमानां च त्वं श्रेयः परमामृतं।
धनधान्याभिवृद्धि श्च सार्वभौम सुखोच्छ्रया, १४७
आंदोलिकादि सौभाग्या मत्तेभादि महोदया।
पुत्र पौत्राभि वृद्धिश्च विद्याभोग बलाधिकम्, १४८
आयुरारोग्य संपत्तिरष्टैश्वर्यं त्वमेव हि।
परमेश विभूति श्च सूक्ष्मात्सूक्ष्मतरागतिः, १४९
सदयापांग संदत्त, ब्रह्मेंद्रादि पदस्थितिः।
अव्याहत महाभाग्यं त्व मेवाक्षोभ्य विक्रमा, १५०
समन्वया च वेदानामविरोधा त्वमेव हि।
निश्श्रेयस पद प्राप्तिसाधना फलरूपिणी। १५१
श्रीमंत्रराजराज्ञी च, श्रीविद्या क्षेमकारिणी,
श्रीं बीज जप संतुष्टा, ऐं ह्रीं श्रीं बीजपालिका, १५२
प्रपत्ति मार्ग सुलभा, विष्णु प्रथम किंकरी,
क्लीं कारार्थ सवित्री च, सौमंगल्याधिदेवता, १५३
श्री षोडशाक्षरी विद्या, श्रीयंत्र पुरनिवासिनी।
सर्वमंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके,
शरण्ये त्र्यंबके देवी नारायणि नमोस्तुते। १५४
पुनः पुनर्नमस्तेस्तु साष्टांग मयुतं पुनः।
सनत्कुमार उवाच ॥।
एवं स्तुता महालक्ष्मीर्ब्रह्मरुद्रादिभिस्स्तुरैः
समद्भिरारैर्देवैश्च निस्सत्वैर्भोग वर्जितैः १
ज्येष्ठा जुष्टैश्च निश्श्रीकैस्संसारात्स्वपरायणैः।
विष्णुपत्नी ददौ तेषां, दर्शनं दृष्टितर्पणम्, २
शरत्पूर्णेलिदु कोट्याभ, धवलापांगवीक्षणैः।
सर्वांत्स त्व समाविष्टां, श्चक्रे हृष्टा वरं ददौ, ३
नमद्भिरार्तैर्देवैश्चनिस्सत्वैर्भोगमर्भितैः

महालक्ष्मीरुवाच :
नाम्नां साष्टसहस्रं मेप्रमादाद्वापि यस्सकृत्,
कीर्तयो तत्कुले सत्यं वसाम्या चंद्रतारकम्। ४
किं पुनर्नियया ज्जप्तुर्मदेक शरणस्य च,
मातृवत्सानुकंपाहं, पोषकीस्यामहर्निशम्। ५
मन्नाम स्मरतां लोके, दुर्लभं नास्ति चिंतितं,
मत्प्रसादेन सर्वेणपि स्वस्वेष्टार्थ मवाप्सथ। ६
लुप्तवैष्णव धर्मस्य मद्वते ष्ववकीर्णिनः,
भक्तिप्रपत्ति हीनस्य वंध्यो नाम्नांजपोणपिमे। ७
तस्मादवश्यं तैर्धोषैर्विहीनः पापवर्जितः,
जपेत्साष्ट सहस्रं मे नाम्नां प्रत्यहमादारात्। ८
साक्षादलक्ष्मीपुत्तोपि दुर्भाग्याप्यलसोपिवा,
अप्रयत्नोपिमूढोपि विकलः पतितोपिच। ९
अवशात् प्राप्नु या द्भाग्यं मत्प्रसादेन केवलं,
स्पृहेय मचिराद्देवाः, वरदानाय जापिनः। १०
सनत्कुमार उवाच :
ददामि सर्वमिष्टार्धे लक्ष्मीति स्मरतां ध्रुवं
इत्युक्त्वालितर्थधे लक्ष्मीं वैष्णवी भगवत्कला ॥ ११
इष्टापूर्तं च सुकृतं भागधेयं च चिंतितम्
स्वं स्वं स्थानं च भोगं च विजयं लेभिरे सुराः १२
तदे तत्प्रवदाम्यद्य लक्ष्मीनाम सहस्रकं,
योगिनः पठतं क्षिप्रंचिंतितार्था न वाप्सथ । १३
गार्ग्य उवाछ :
सनत्कुमारयोगींद्र इत्युक्त्वास दयानिधिः
अनु गृह्य ययौक्षिप्रं तांश्च द्वादशयोगिनः
तस्मा देतद्रहस्यं च, गोप्यं जप्यं प्रयत्नतः
अष्टम्यां च चतुर्धश्यां नवम्यां भृगुवासरे,
पौर्णमास्या ममयां च सर्वकाले विशेषतः
जपेद्वा नित्यकार्येषु सर्वान्कामा नवाप्नुयात् ॥
इति श्री स्कांदपुराणे सनत्कुमार संहितायं
श्री लक्ष्मी सहस्रनाम मंत्र स्तोत्रम्स्समाप्तं।

Please send corrections to sanskrit@cheerful.com
Last updated April 3, 2002